• शिव भक्त...

पार्थिव शिवलिंग

सावन के माह में भक्त शिव की अलग-अलग तरीके से भक्ति करते हैं। उसी में से एक तरीका है पार्थिव शिवलिंग की स्थापना करके पूजा करने का, यानि की मिट्टी से शिवलिंग स्थापित करना। सावन के माह में शिव के पार्थिव शिवलिंग के पूजन का विशेष महत्व है लेकिन इसके कुछ नियम हैं।

अक्सर हम छोटी-छोटी गलतियां कर बैठे हैं जिससे हमें पूजा का फल पूर्ण रूप से फल नहीं मिल पाता इसलिए अगर आप पार्थिव शिवलिंग स्थापित करने जा रहे हैं तो उसे बनाने के नियम और पूजन की विधि को ध्यानपूर्वक जान लेना आवश्यक है।

पार्थिव शिवलिंग को बनाने के लिए आप किसी भी नदी, तालाब, सरोवर की मिट्टी को दो हाथ तक खोद लें और वहां से मिट्टी निकालें। अगर ऐसा संभव न हो पाए तो आप अपने गमले की मिट्टी का भी प्रयोग कर सकते हैं। इस मिट्टी को साफ करने अर्थात छानने के बाद, इस मिट्टी में थोड़ा गंगाजल और कच्चा दूध डालकर इसे अच्छे से मिला लें।

मिट्टी इतनी सख्त होनी चाहिए आकार दिया जा सके। इसके बाद

आप किसी भी पात्र में एक बेलपत्र स्थापित करें। याद रहे बेलपत्र कटा-फटा नहीं होना चाहिए। तीन पत्ते वाले बेलपत्र को स्थापित करने के बाद उस पर गंगाजल का छिड़कें। उसके बाद एक शिवलिंग के आकार का निर्माण करें. यह शिवलिंग अंगूठे से ज्यादा ऊंचा नहीं होना चाहिए। इसके बाद इसके आसपास जलहरि बना लें।

शिवलिंग को स्थापित करने के नियम-पार्थिव शिवलिंग को स्थापित करने के लिए कोई भी एक लकड़ी का फट्टा या चौकी ले लें। उसे एक साफ स्थान पर रखें जहां आप पूजा करने वाले हैं। उसके बाद इस चौकी पर थोड़ा सा गेरू और गंगाजल डालकर उसे लीप लें। तत्पश्चात अब आपने जो शिवलिंग तैयार किया था उस पात्र को इस चौकी पर स्थापित करें। इसके साथ ही आप 108 या 1008 लिंग बना लें। इन्हें भी प्रमुख स्वरूप के साथ स्थापित करें। अब आप पार्थिव शिवलिंग पर सर्वप्रथम भस्म अर्पित करें।

• पूजा-पाठ...

सावन में प्रदोष व्रत का महत्व

सावन मास में प्रदोष व्रत रखने का बड़ा महत्व है। शिवजी के प्रिय मास सावन में भोलेनाथ को समर्पित प्रदोष व्रत रखने से हर मनोकामना पूरी होती है और पुण्य की प्राप्ति होती है। प्रदोष व्रत हर महीने की त्रयोदशी तिथि को रखा जाता है। और भगवान शिव अपने भक्तों को सुख, शांति और लंबी आयु प्रदान करते हैं। इसके साथ ही शिव पुराण में लिखा गया है कि प्रदोष व्रत करने से मनुष्य के सभी पाप धुल जाते हैं और उसे शिव धाम में शिव चरणों में जगह मिलती है। ऐसे में आइये जानते हैं कि सावन मास में प्रदोष व्रत कब रखा जाएगा। इसके साथ ही प्रदोष व्रत की पूजा विधि क्या है।

प्रदोष व्रत का शुभ मुहूर्त-सावन मास के कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी तिथि को प्रदोष व्रत रखा जाएगा। यानी सावन का पहला प्रदोष व्रत 22 जुलाई यानी मंगलवार को रखा जाएगा। मंगलवार होने की वजह से इस प्रदोष व्रत को भौम प्रदोष व्रत के रूप में जाना जाएगा। और ऋणमोचन के लिए भौम प्रदोष व्रत रखा जाता है। त्रयोदशी तिथि 22 जुलाई को सुबह 7.06 बजे लगेगी और देर रात 2.29 बजे समाप्त होगी।

प्रदोष व्रत का महत्व-प्रदोष व्रत पर शाम को शिव पूजन करने का महत्व है। पौराणिक कथा की मानें तो चंद्रमा को क्षय रोग हो गया था। इस वजह से वह काफी दर्द में था। तब चंद्रमा ने शिवजी का व्रत रखा था। शिवजी ने त्रयोदशी के दिन चंद्रमा के दुख दूर करते हुए उन्हें नया जीवन दिया था। इसलिए इस दिन व्रत रखा जाता है और इसे प्रदोष व्रत के नाम से जाना जाता है। यह काफी असरदायक है और विधि विधान से व्रत रखने वाले मनुष्य के शत्रुओं का नाश होता है।

प्रदोष व्रत की पूजा विधि-प्रदोष व्रत में सूर्यास्त के बाद स्नान करने का भी महत्व है। और शाम के समय साफ और सफेद कपड़े पहनकर पूर्व की ओर मुंह रखकर भगवान शिव की पूजा की जाती है। सबसे पहले मिट्टी का शिवलिंग बनाएं। फिर विधि विधान के साथ इनकी पूजा करें। सबसे पहले दीया जलाएं। भगवान गणेश की पूजा करें। शिवजी को जल, दूध, पंचामृत से स्नान कराएं। बेल पत्र, फूल, पूजा सामग्री से पूजन करें। भगवान को भोग लगाएं। शिवजी को मिठाई, धतूरा, बेल पत्र आदि जरूर चढ़ाने चाहिए। प्रदोष व्रत की कथा पढ़ें और अंत में शिवजी की आरती करें।

नाग-नागिन का जोड़ा

धार्मिक मान्यता के अनुसार, सावन में चांदी के नाग-नागिन का जोड़ा शिवलिंग पर चढ़ाने से काल सर्प दोष से मुक्ति मिलती है और धन-धान्य में बरकत होती है।

इसके अलावा, सावन में शिवलिंग पर चांदी का नाग नागिन का जोड़ा चढ़ाना भगवान शिव की कृपा प्राप्त करने और नकारात्मक ऊर्जा को दूर करने का भी एक सरल उपाय माना जाता है...

हिंदू धर्म में श्रावण मास का विशेष महत्व माना जाता है, क्योंकि यह भोलेनाथ की प्रिय महीना है। इस महीने में शिवभक्त महादेव को प्रसन्न करने के लिए पूजा-पाठ और व्रत करते हैं। साथ ही, शिवलिंग पर बहुत सी चीजें भी चढ़ाते हैं, जिनमें से एक है नाग नागिन का जोड़ा। सावन के महीने में चांदी के नाग नागिन का जोड़ा घर लाना बेहद शुभ माना गया है। इस महीने में बहुत से लोग शिवलिंग पर चांदी के नाग नागिन का जोड़ा भी चढ़ाते हैं। आइए जानते हैं कि शिवलिंग पर चांदी के नाग नागिन का जोड़ा चढ़ाने से क्या होता है।

- आमतौर पर चांदी या पंचधातु से बना हुआ नाग-नागिन का जोड़ा शिवलिंग पर चढ़ाया जाता है, जो कि यह नाग पंचमी या सावन शिवरात्रि जैसे शुभ अवसरों पर चढ़ाना विशेष फलदायी माना जाता है। लेकिन सावन के महीने में किसी भी दिन शिवलिंग पर चांदी का नाग नागिन का जोड़ा चढ़ाना बहुत ही शुभ माना जाता है।
- धार्मिक मान्यता के अनुसार, सावन में चांदी के नाग-नागिन का जोड़ा शिवलिंग पर चढ़ाने से काल सर्प दोष से मुक्ति मिलती है और धन-धान्य में बरकत होती है। इसके अलावा, सावन में शिवलिंग पर चांदी का नाग नागिन का जोड़ा चढ़ाना भगवान शिव की कृपा प्राप्त करने और नकारात्मक ऊर्जा को दूर करने का भी एक सरल उपाय माना जाता है।
- **शिवलिंग पर नाग-नागिन कैसे चढ़ाएं**-शिवलिंग पर नाग-नागिन का जोड़ा चढ़ाना एक धार्मिक मान्यता है। काल सर्प दोष से मुक्ति पाने और भगवान शिव का आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए शिवलिंग पर चांदी का नाग-नागिन का जोड़ा चढ़ाया जाता है।
- **चांदी या तांबे का नाग-नागिन का जोड़ा :** आप किसी मंदिर के पास या पूजा सामग्री की दुकान से चांदी या तांबे का नाग-नागिन का जोड़ा खरीद सकते हैं।
- **सही दिन चुनें :** नाग पंचमी, सोमवार या श्रावण सोमवार का दिन शिवलिंग पर नाग-नागिन का जोड़ा चढ़ाने के लिए शुभ माना जाता है।
- **मंदिर जाएं :** फिर किसी ऐसे शिव मंदिर में जाएं जहां शिवलिंग स्थापित हो।
- **अभिषेक करें :** अब शिवलिंग का अभिषेक दूध, जल, शहद, घी और दही से करें।
- **नाग-नागिन का जोड़ा स्थापित करें :** इसके बाद चांदी या तांबे के नाग-नागिन के जोड़े को शिवलिंग पर स्थापित करें।
- **मंत्र जाप करें :** इस दौरान 'ऊं नम: शिवाय' या 'ऊं नागेंद्रहाराय नम:' मंत्र का 11 या 108 बार जाप करें।

■ पं. नित्यानंद

शिवलिंग पर तेल

सावन में शिव जी पृथ्वी पर वास करते हैं। यही वजह है कि इस माह में महादेव की पूजा का महत्व बढ़ जाता है। वैसे तो भोलेनाथ बड़े भोले हैं, एक लौटा जल में ही प्रसन्न हो जाते हैं, लेकिन सावन में शिवलिंग पर 3 तरह के तेल चढ़ाना बेहद शुभ माना जाता है। इसके प्रभाव से अनेक लाभ मिलते हैं। आइए जानते हैं सावन में शिवलिंग पर कौन सा तेल चढ़ाना चाहिए।

■ **तिल का तेल**-सावन में शिवलिंग पर तिल का तेल चढ़ाने से रोगों, दोष और तमाम तरह के मानसिक और शारीरिक कष्टों से मुक्ति मिलती है। तिल की उत्पत्ति विष्णु जी से हुई है। शिवलिंग पर तिल चढ़ाने से सुख-सौभाग्य बढ़ता है। साथ ही जो लो महादेव को काले तिल अर्पित करते हैं उन्हें शनि के अशुभ परिणामों से मुक्ति मिलती है।

■ **चंदन का तेल**-सावन में शिव पूजा के दौरान शिवलिंग पर चंदन का तेल चढ़ाने का भी विधान है। मान्यता है कि सावन सोमवार के दिन जो लोग महादेव का चंदन के तेल से अभिषेक करते हैं उनके जीवन में ग्रहों की असुभता दूर होने लगती है। ग्रहों के अशुभ प्रभाव से नौकरी में आ रही बाधाओं का नाश होता है साथ ही पारिवारिक रिश्ते भी सुधरते हैं।

■ **सरसों का तेल**-शास्त्रों के अनुसार सावन में कई लोग शिवलिंग पर सरसों का तेल भी चढ़ाते हैं। मान्यता है कि इसके प्रभाव से शत्रु शांत होता है। विरोधी जो कार्य में अड़चने पैदा करने की कोशिश करते हैं वो विफल होती है। ऐसा करने पर शनि की साढ़ेसाती और ढैय्या का बुरा प्रभाव भी कम होने लगता है। जीवन में सुख का आगमन होता है और समृद्धि में बढ़ोत्तरी होती है।

• मां लक्ष्मी...

संध्याकाल

हिंदू धर्म में संध्याकाल का समय देवी लक्ष्मी को समर्पित है। लक्ष्मी पूजन के लिए शाम का शुभ होता है। इसलिए शाम के समय कई तरह के काम वर्जित होते हैं, क्योंकि इससे लक्ष्मीजी नाराज हो जाती हैं। यह देवी लक्ष्मी के आगमन का समय होता है। इसलिए शास्त्रों में शाम के समय कुछ कार्य न करने की सलाह दी जाती है। शाम के समय सफेद रंग की चीजों जैसे दूध, दही, नमक आदि का लेन-देन बिल्कुल न करें। शाम के समय अगर किसी को ये चीजें देते हैं तो इससे कुंडली में शुक्र कमजोर होकर आर्थिक समस्या का कारण बन सकते हैं। सूर्यास्त के बाद पैसों का लेन-देन करने वालों से भी मां लक्ष्मी नाराज हो जाती है। क्योंकि यह समय धन की देवी लक्ष्मी के आगमन का होता है। ऐसे समय में पैसे उधार देने पर आपको आर्थिक समस्या का सामना करना पड़ सकता है।

• शनि...

शनि अभी वक्री चल रहे हैं ऐसे में जिन लोगों को नौकरी, धन, कारोबार में परेशानी हो रही है वह सावन शनिवार पर शिवलिंग पर काले तिल और उड़द के दाने अर्पित करें। इससे शनि की अशुभता दूर होती है। शनिदेव को प्रसन्न करने के लिए हनुमानजी की आराधना करें, खासकर सावन के महीने में। सावन के हर शनिवार को सूर्यास्त के बाद पीपल के पेड़ के नीचे सरसों के तेल का दीपक जलाएं और शनि स्तोत्र का पाठ करें।

स्वामी/प्रकाशक/मुद्रक/संपादकः अनल पत्रवाल द्वारा गांव व डाकघर-रजियाणा, तहसील-नगरोटा बगवां, जिला-कांगड़ा-176056, हिमाचल प्रदेश से प्रकाशित एवं एजीएस पब्लिकेशन्स, डी-67, सेक्टर-6, नोएडा-201301, गौतम बुद्ध नगर, उत्तर प्रदेश से मुद्रित